मसककली नहीं
कथकली कथकली...

सुनील मिश्र

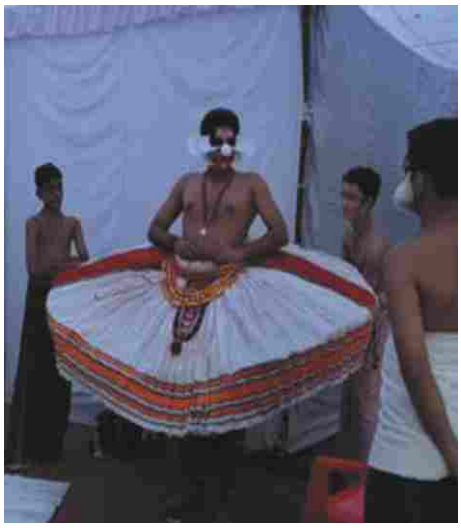

मैं खजुराहो में हूँ। नृत्य समारोह का आज आखिरी दिन है। आज की शाम सबसे पहले त्रिचूर के डॉ. एन. आर. ग्राम प्रकाशन ग्रुप के कलाकार अपनी प्रस्तुति देंगे। यह ग्रुप बालि वध के मंचन की तैयारी में लगा है। सौन्दर्य, गहरे रंगों की सज्जा और परिधान के साथ-साथ आँखों से हावभावों को दिखाना कथकली को खास बनाता है। कथकली में आमतौर पर रामायण और महाभारत की कथाओं पर आधारित प्रस्तुतियाँ हुआ करती हैं।

दोपहर के दो बज रहे हैं। कलाकार अभी से मंच पर आ गए हैं। शाम सात बजे मंच पर नृत्य पेश करना है। दोपहर का भोजन हो चुका है, चाय-पानी आदि भी। एक बार मेकअप शुरू हुआ तो पूरे चार घण्टे चलेगा। प्रस्तुति होने तक कुछ भी खाया-पिया नहीं जा सकेगा।

मैं देख रहा हूँ। एक रस्सी पर आकर्षक चटख रंगों की मेकअप सामग्री लटका दी गई है। सूत, रस्सी के बने आभूषण, चुटीले और तमाम जगमग करते अंगवस्त्र। दो मेकअप आर्टिस्ट कलामण्डलम बालन और सतीश के सामने दो कलाकार कलामण्डलम रवि कुमार और कलामण्डलम हरि आर. नायर लेटे हुए हैं। वे बालि और सुग्रीव का चरित्र निभाने वाले हैं। मेकअप आर्टिस्ट उनके चेहरों को विभिन्न रंगों से रंग रहे हैं। बालन बतलाते हैं कि हम खासतौर पर पीले रंग को मेकअप का आधार बनाते हैं। इसी पीले रंग में दूसरे रंग मिलाकर बाकी के रंग बनाते हैं। सफेद रंग एवं चेहरे पर गत्ता चिपकाने के लिए पिसे हुए चावल का इस्तेमाल किया जाता है।

मुझसे बात करने के साथ-साथ वे अपना काम तल्लीनता से कर रहे हैं। यह सधापन, रंग-चयन और चेहरे को किरदार के हिसाब से गढ़ने का गज़ब का सन्तुलन और कहाँ दिखेगा? कलामण्डलम मुकुन्दन, जो राम की भूमिका निभाने वाले हैं अपना मेकअप खुद ही कर रहे हैं। अंगद बने कलाकार सिबि चक्रवर्ती की उमर तो शायद बारह-तेरह साल ही होगी। घण्टों की यह मेहनत प्रस्तुति के बाद बमुश्किल पन्द्रह मिनिट में पौंछ दी जाती है।

चकमक के अगले किसी अंक में हम तुम्हें कथकली के इन कलाकारों से मिलवाएँगे। और तब कथकली के बारे में उनसे और कई बातें जानेंगे।